❍ 19 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗ज्ञान के सर्व अलंकारों को धारण किया ?∗

➢➢ ∗बाप के राईट हैण्ड धर्मराज को स्मृति में रख कोई विकर्म तो नहीं किया ?∗

➢➢ ∗दृढ़ प्रतिज्ञा द्वारा अलबेलेपन के लूज़ स्क्रू को टाइट किया ?∗

➢➢ ∗बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण की ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ जैसे साकार में आने जाने की सहज प्रैक्टिस हो गई है वैसे आत्मा को अपनी कर्मातीत अवस्था में रहने की भी प्रैक्टिस हो। अभी-अभी कर्मयोगी बन कर्म में आना, कर्म समाप्त हुआ फिर कर्मातीत अवस्था में रहना, इसका अनुभव सहज होता जाए। ∗सदा लक्ष्य रहे कि कर्मातीत अवस्था में रहना है, निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने फिर कर्मातीत।∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं अनेक बार की विजयी आत्मा हूँ"*

〰✧ अनेक बार की विजयी आत्मायें हैं, ऐसा अनुभव करते हो? विजयी बनना मुश्किल लगता है या सहज? *क्योंकि जो सहज बात होती है वह सदा हो सकती है, मुश्किल बात सदा नहीं होती। जो अनेक बार कार्य किया हुआ होता है, वह स्वत: ही सहज हो जाता है। कभी कोई नया काम किया जाता है तो पहले मुश्किल लगता है लेकिन जब कर लिया जाता है तो वही मुश्किल काम सहज लगता है।*

〰✧ तो आप सभी इस एक बार के विजयी नहीं हो, अनेक बार के विजयी हो। *अनेक बार के विजयी अर्थात् सदा सहज विजय का अनुभव करने वाले। जो सहज विजयी हैं उनको हर कदम में ऐसे ही अनुभव होता कि यह सब कार्य हुए ही पड़े हैं, हर कदम में विजयी हुई पड़ी है। होगी या नहीं - यह संकल्प भी नहीं उठ सकता।* जब निश्चय है कि अनेक बार के विजयी हैं तो होगी या नहीं होगी - यह क्वेश्चन नहीं। 'निश्चय की निशानी है नशा और नशे की निशानी है खुशी'। जिसको नशा होगा वह सदा खुशी में रहेगा। हद के विजयी में भी कितनी खुशी होती है। जब भी कहाँ विजय प्राप्त करते हैं, तो बाजे-गाजे बजाते हैं ना।

〰✧ तो जिसको निश्चय और नशा है तो खुशी जरूर होगी। वह सदा खुशी में नाचता रहेगा। शरीर से तो कोई नाच सकते हैं, कोई नहीं भी नाच सकते हैं लेकिन मन में खुशी का नाचना - यह तो बेड पर बीमार भी नाच सकता है। कोई भी हो, यह नाचना सबके लिए सहज है। *क्योंकि विजयी होना अर्थात् स्वत: खुशी के बाजे बजना। जब बाजे बजते हैं तो पांव आपेही चलते रहते हैं। जो नहीं भी जानते होंगे, वह भी बैठे-बैठे नाचते रहेंगे। पांव हिलेगा, कांध हिलेगा। तो आप सभी अनेक बार के विजयी हो - इसी खुशी में सदा आगे बढ़ते चलो।* दुनिया में सबको आवश्यकता ही है खुशी की। चाहे सब प्राप्तियां हों लेकिन खुशी की प्राप्ति नहीं है। तो जो अविनाशी खुशी की आवश्यकता दुनिया को है, वह खुशी सदा बांटते रहो।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ज्ञानी तू आत्मा हो ना? ज्ञानी का अर्थ ही है समझदारा और आप तो तीनों कालों के समझदार हो, इसलिए *होली मनाना अर्थात इस गलती को जलाना।* जो भूलना है वह सेकण्ड में भूल जाये और जो याद करना है वह सेकण्ड में याद आए। कारण सिर्फ बिन्दी के बजाए क्वेचन मार्क है।

〰✧ क्यों सोचा और क्य शरू हो जाती है। ऐसा, वैसा, क्यों, क्या बडी क्य

शुरू हो जाती है। सिर्फ क्वेचन मार्क लगाने से। और बिन्दी लगा दो तो क्या होगा? *आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और व्यर्थ को भी बिन्दी, फुलस्टॉप स्टॉप भी नहीं, फुलस्टॉप।* इसको कहा जाता है होली।

〰✧ और इस होली से सदा बाप के संग के रंग की होली, मिलन मानते रहेंगे। सबसे पक्का रंग कौन-सा है? यह स्थूल रंग भल कितने भी पक्के हो लेकिन *सबसे पक्का रंग है बाप के संग का रंगा तो इस रंग से मनाओ।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ बापदादा ने पहले भी समझाया है कि मुख्य ब्राह्मण जीवन के खज़ाने हैं- संकल्प, समय और वैसे श्वाँस भी बहुत अमूल्य है। एक श्वाँस भी कामन न हो। व्यर्थ नहीं हो। भक्ति में कहते हैं श्वाँसों-श्वाँस अपने इष्ट को याद करो। श्वाँस व्यर्थ नहीं जाये। *मुख्य संकल्प, समय और श्वाँस - आज्ञा प्रमाण सफल होता है? व्यर्थ तो नहीं जाता क्योंकि व्यर्थ जाने से जमा नहीं होता।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- शोक वाटिका से अशोक वाटिका में जाना"*

➳ _ ➳ मै आत्मा देह की मिटटी में गर्दन तक... धँसी हुई ईश्वर पिता को पुकार रही थी... कि मीठे बाबा ने आसमाँ से उतरकर... अपनी फूलो सी गोद में मुझे बिठा दिया... ईश्वरीय पालना में पलकर मै आत्मा विकारी जीवन से मुक्त हो गयी... *मेरे दुखो में कंटीले जीवन को मीठे बाबा ने अपने प्यार की मखमली छाया में फूलो जैसा कोमल और स्निग्ध बना दिया है.*.. मेरे इस खुबसूरत रूप और गुणो की महक का पूरा विश्व दीवाना हो रहा है... मुझे प्यारे बाबा ने अपने प्यार में महकता दिव्य गुलाब बना दिया है...प्यारे बाबा पर दिल का प्यार उंडेलने मै आत्मा... मीठे बाबा के कमरे में पहुंचती हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को खुशियो का फ़रिश्ता बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... मीठे बाबा की यादो का हाथ पकड़कर... दुखो की दुनिया से निकलकर... सुखो की जन्नत में खुशियो से सजा हुआ जीवन जीओ... *सदा सुखो में मुस्कराओ और अशोक वाटिका में आनन्द और प्रेममय जीवन जीने वाले,महान भाग्यशाली बनो.*.. मीठे बाबा के प्यार में देह का विकारी जीवन त्यागकर, आत्मिक नशे में खो जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के अथाह प्यार को पाकर दिव्यता से निखरते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा ईश्वरीय दौलत से भरपूर होकर, कितनी प्यारी और मालामाल हो गयी हूँ... आपने प्यारे बाबा... मेरे जीवन में आकर, मुझे कितना ऊँचा उठा दिया है... मेरा कितना मान बढ़ा दिया है... *मझे दिव्य और पावन बनाकर, सखो भरी अशोक वाटिका में ले जा रहे हो.*..

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को ईश्वरीय खजानो से भरपूर करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता की यादो में गहरे डूबकर, देह की मिटटी से उपराम हो जाओ... *जनमो के विकारो से मुक्त होकर, पवित्रता से सजधज कर, सतयुगी सुखो में आनन्द भरे नगमे गाओ.*.. मीठे बाबा की यादो भरी ऊँगली पकड़... इस विकारो भरी नदी से निकलकर... खुशियो के जहान में मुस्कराओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की अमूल्य शिक्षाओ को अपने दिल में उतारते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा *आपकी फूलो सी गोद में बैठकर खुशनुमा फूल बनती जा रही हूँ..*. देह के भान से निकलकर... अपने तेजस्वी स्वरूप के नशे में खोती जा रही हूँ... सारे विकारो से मुक्त हो रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सारे दुखो से मुक्त कराते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... सदा सच्ची यादो में खोकर अपने खोये प्रकाश से पुनः भर जाओ... *देह की शोक वाटिका से निकलकर, आत्मिक गुणो की अशोक वाटिका में सुख भरे साम्राज्य का आनन्द उठाओ..*. अपनी आत्मिक सुंदरता को पुनः पाकर शान से देवताई राज्य भाग्य को पाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा के प्यार में गहरे डूबकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा ईश्वरीय प्यार में पलने वाली महान भाग्यशाली आत्मा हूँ... *भगवान स्वयं मुझे इस शोक वाटिका से निकाल कर... अशोक वाटिका में ले जाने आया है..*. मै आत्मा आपके असीम प्यार में देह की मिटटी से निकलती जा रही हूँ... और आत्मिक प्रकाश में दमक रही हूँ..."मीठे बाबा को अपने दिल की बात सुनाकर मै आत्मा... इस धरा पर लौट आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप के राइट हैण्ड धर्मराज़ को स्मृति में रख कोई भी विकर्म नहीं करने हैं*"

➳ _ ➳ बाबा का राइट हैण्ड धर्मराज है ये बात स्मृति में लाते ही मन मे विचार चलते हैं कि जब अंत समय होगा, बाबा का धर्मराज का रूप होगा और सभी आत्माओं के कर्मो का हिसाब किताब चुकतू होगा उस समय का दृश्य कैसा होगा! *इन्ही विचारों के साथ एक - एक करके आंखों के सामने कुछ दृश्य उभरने लगते हैं। मैं देख रही हूँ सूक्ष्म वतन में ट्रिब्यूनल लगी है। धर्मराज के रूप में बाबा सामने बैठे हैं*। एक - एक करके बाबा के सामने सभी ब्राह्मण आत्मायें आ रही है और बाबा उनके द्वारा किये हुए सभी अच्छे और बुरे कर्मो का पूरा लेखा - जोखा उन्हें एक बहुत बड़ी स्क्रीन पर दिखा रहें हैं।

➳ _ ➳ मैं देख रही हूँ जो ब्राह्मण आत्मायें बाबा की श्रीमत को नजरअंदाज करके अपने कीमती समय को गफलत में बर्बाद करती रही थी वो अपराधी की तरह बाबा के सामने अपनी आंखें नीची किये खड़ी हैं। उनके अपराध के अनुसार धर्मराज के द्वारा उन्हें कड़ी सजाये सुनाई जा रही हैं। इतनी कड़ी सजायें सुनकर वो आत्मायें डर से कांप रही हैं और अपने किये हुए विकर्मों के लिए माफी मांग रही हैं। बहुत ही दयनीय स्थिति है उनकी। किंतु *बाप के रूप में बाबा का वो लाड, प्यार और दुलार अब धर्मराज की सजाओं का रूप ले चुका है। जिसके लिए कोई रियायत नही है*।

➳ _ ➳ इस भयानक दृश्य को देख मैं मन ही मन स्वयं से प्रतिज्ञा करती हूँ कि *बाबा की याद में रह मुझे जल्दी ही मुझ आत्मा पर चढ़े विकर्मों के बोझ को भस्म करना है और साथ ही साथ अब ऐसा कोई भी विकर्म नही करना जिससे मुझ आत्मा पर विकर्मों का कोई और बोझ चढ़े और मुझे बाबा का धर्मराज का रूप देखना पड़े*। यह प्रतिज्ञा करके मैं जैसे ही शिव बाबा को याद करती हूँ मेरे दिलाराम बाबा के स्नेह की डोर मुझे सहज ही अपनी ओर खींचने लगती है। बाबा की लाइट माइट पड़ते ही मैं अपने लाइट के फ़रिशता स्वरूप में स्थित हो कर ऊपर की ओर चल पड़ती हूँ।

➳ _ ➳ बापदादा के स्नेह की डोर से बंधा मैं फ़रिशता सूक्ष्म लोक में प्रवेश करता हूँ। सूक्ष्म वतन के दिव्य अलौकिक नज़ारे को मैं फ़रिशता मन बुद्धि रूपी नेत्रों से स्पष्ट देख रहा हूँ। *बापदादा की दिव्य किरणे इस सूक्ष्म वतन में चारों ओर फैली हुई हैं। मैं बाबा के पास पहुंच कर बाबा के सामने खड़ा हो जाता हूँ*। बाबा मुझे दृष्टि दे रहें हैं। बाबा के नयनो से अथाह स्नेह की धाराएं बह रही हैं। बाबा के वरदानी हस्तों से गुण और शक्तियों की किरणें निकल - निकल कर मुझ फ़रिश्ते में समा रही हैं। *अपना वरदानी हाथ बाबा मेरे सिर पर रख कर मुझे विकर्माजीत भव का वरदान दे रहें हैं*।

➳ _ ➳ बापदादा से विकर्माजीत भव का वरदान और दृष्टि ले कर अब मैं अपने निराकारी स्वरूप में स्थित होती हूँ और 63 जन्मो के विकर्मों को भस्म करने के लिए परमधाम की ओर चल पड़ती हूँ। *अपने बीज रुप परमपिता परमात्मा शिव बाबा के सामने मैं मास्टर बीज रुप आत्मा जा कर विराजमान हो जाती है। बाबा से आ रही सर्वशक्तियों की अनन्त किरणे अब निरन्तर मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं जो धीरे - धीरे ज्वलन्त स्वरूप धारण करती जा रही है*। मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ कि बाबा मुझ आत्मा के विकारों रूपी किचड़े को अपनी जवलंत शक्तियों से भस्म कर रहे हैं।

➳ _ ➳ आंतरिक रूप से मैं शुद्ध बनती जा रही हूँ। परमात्म लाइट मुझ आत्मा में समाकर मुझे पावन बना रही है। मैं स्वयं में परमात्म शक्तियों की गहन अनुभूति कर रही हूं। शक्ति स्वरुप बनकर अब मैं परम धाम से नीचे आकर अपने साकारी तन में प्रवेश कर रही हूँ। *अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर हर कर्म करते अब मुझे सदा यह स्मृति रहती है कि बाबा का राइट हैण्ड धर्मराज है। और धर्मराज की सजायें मुझे ना खानी पड़े इसके लिए बाबा की याद में रह, हर कर्म करने का तीव्र पुरुषार्थ अब मैं आत्मा निरन्तर कर रही हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं दृढ़ प्रतिज्ञा द्वारा अलबेलेपन के लूज़ स्क्रू को टाइट करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं तीव्र पुरुषार्थी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा समय की समीपता के फाउंडेशन को पक्का करती हूँ ।*
✺ *मैं बेहद की वैरागी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ (ड्रिल बहुत अच्छी लग रही थी) यह रोज हर एक को करनी चाहिए। ऐसे नहीं हम बिजी हैं। *बीच में समय प्रति समय एक सेकण्ड चाहे कोई बैठा भी हो, बात भी कर रहा हो, लेकिन एक सेकण्ड उनको भी ड्रिल करा सकते हैं* और स्वयं भी अभ्यास कर सकते हैं। कोई मुश्किल नहीं है। *दो-चार सेकण्ड भी निकालना चाहिए इससे बहुत मदद मिलेगी।* नहीं तो क्या होता

है, सारा दिन बुद्धि चलती रहती है ना, तो विदेही बनने में टाइम लग जाता है और बीच-बीच में अभ्यास होगा तो जब चाहें उसी समय हो जायेंगे क्योंकि *अन्त में सब अचानक होना है। तो अचानक के पेपर में यह विदेही पन का अभ्यास बहुत आवश्यक है।* ऐसे नहीं बात पूरी हो जाए और विदेही बनने का पुरुषार्थ ही करते रहें। तो सूर्यवंशी तो नहीं हुए ना! इसलिए *जितना जो बिजी है, उतना ही उसको बीच-बीच में यह अभ्यास करना जरूरी है।* फिर सेवा में जो कभी-कभी थकावट होती है, कभी कुछ-न -कुछ आपस में हलचल हो जाती है, वह नहीं होगा। अभ्यासी होंगे ना। *एक सेकण्ड में न्यारे होने का अभ्यास होगा, तो कोई भी बात हुई एक सेकण्ड में अपने अभ्यास से इन बातों से दूर हो जायेंगे। सोचा और हुआ।*

➳ _ ➳ युद्ध नहीं करनी पड़े। युद्ध के संस्कार, मेहनत के संस्कार सूर्यवंशी बनने नहीं देंगे। लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी, अगर विदेही बनने का सेकण्ड में अभ्यास नहीं है तो। और जिस बात में कमजोर होंगे, चाहे स्वभाव में, चाहे सम्बन्ध में आने में, चाहे संकल्प शक्ति में, वृत्ति में, वायुमण्डल के प्रभाव में, जिस बात में कमजोर होंगे, उसी रूप में जानबूझकर भी माया लास्ट पेपर लेगी। इसीलिए *विदेही बनने का अभ्यास बहुत जरूरी है।* कोई भी रूप की माया आये, समझ तो है ही। *एक सेकण्ड में विदेही बन जायेंगे तो माया का प्रभाव नहीं पड़ेगा।* जैसे कोई मरा हुआ व्यक्ति हो, उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ना। *विदेही माना देह से न्यारा हो गया तो देह के साथ ही स्वभाव, संस्कार, कमजोरियां सब देह के साथ हैं, और देह से न्यारा हो गया, तो सबसे न्यारा हो गया।* इसलिए यह ड्रिल बहुत सहयोग देगी, *इसमें कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए। मन को कन्ट्रोल कर सकें, बुद्धि को एकाग्र कर सकें।* नहीं तो आदत होगी तो परेशान होते रहेंगे। पहले एकाग्र करें, तब ही विदेही बनें। अच्छा। आप लोगों का तो अभ्यास 14 वर्ष किया हुआ है ना! (बाबा ने संस्कार डाल दिया है) फाउण्डेशन पक्का है।

✺ *ड्रिल :- "सारे दिन के बीच-बीच में सेकण्ड में विदेही बनने का अभ्यास करना"*

➳ ➳ आवाज से परे, सनहरी लाल प्रकाशमय निराकार दुनिया में, मैं

आत्मा स्वयं को अनुभव कर रही हूँ... *मैं आत्मा स्थूल, सुक्ष्म देह से मुक्त, इस मुक्तिधाम के एकदम मुक्त अवस्था का अनुभव कर रही हूँ...* मैं सतचित आंनद स्वरूप आत्मा स्वधर्म में स्थित, स्वरूप में स्थित निजानंद में हूँ... *सामने महाज्योती सर्वशक्तिमान... सर्वशक्तिमान से अनंत शक्तियाँ मुझ निराकार आत्मा में समा रही है...* एक-एक शक्ति को गहराई से अनुभव कर रही हूँ मैं आत्मा... *अपने अंदर समाती एक-एक का स्वरूप बनती जा रही हूँ...* शिवपिता की किरणों में समाया हुआ अनुभव कर रही हूँ मैं विदेही आत्मा... मैं आत्मा अंनत शक्तियों से सम्पन्नता भरपूरता का अनुभव कर रही हूँ... *इसी नव उर्जा के साथ मैं आत्मा धरती की ओर प्रस्थान करती हूँ...* साकारी दुनिया में साकारी देह में मैं आत्मा अवतरित होती हूँ... और मैं आत्मा देख रही हूँ... *स्वयं को इस कर्म क्षेत्र पर भिन्न-भिन्न कार्यकलाप करते हुए...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा अब स्वयं को गृह के कार्य करते हुए देख रही हूँ... सभी कार्य करते, *मैं आत्मा एक सेकंड में समस्त चेतना को एकाग्र कर लेती हूँ भृकुटि के मध्य में... सामने आंनद का सागर मेरा बाबा है...* आंनद के सागर से अंनत आंनद की किरणों की बारिश मुझ आत्मा पर हो रही हैं... मैं आत्मा स्वयं को आंनद स्वरूप अनुभव कर रही हूँ... *पूरे घर में आंनद की किरणों की बारिश मुझ आत्मा से हो रही है... आसपास की हर आत्मा आंनद की अनुभूति कर रही हैं...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा देख रही हूँ... एक भीड़ भरे स्थान से गुजरते हुए... चारों तरफ शोर ही शोर हैं... अलग-अलग तरह के वायब्रेशन्स से वायुमंडल प्रभावित है... *एक पावरफुल बेक्र के साथ मैं आत्मा मन में चल रहे संकल्पों को स्टाप करती हूँ... और स्थित हो जाती हूँ... अपने स्वधर्म में... और गहराई से अनुभव कर रही हूँ...* मैं अपने इस शांत स्वरूप को, शांति के सागर की छत्रछाया में, मुझ शांत स्वरूप आत्मा से *शांति की बारिश चारों ओर हो रही है... सभी आत्माएँ इस शांति की बारिश में भीगकर शांति की अनुभूति कर रही है...*

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा देख रही हूँ... स्वयं को आफिस में वर्क करते हुए... *इस व्यवस्था के बीच, मैं आत्मा मन में उठ रही विचारों रूपी लहरों को, अन्तरमखता रूपी सागर के तल में जाकर कहती हूँ कीप क्वाइट...* और सेकेंड

में देह से न्यारी मैं विदेही आत्मा पहुंच जाती हूँ... बाबा की कुटिया में चारों तरफ लाल प्रकाश बीच में *मैं आत्मा सुख के सागर बाबा की शक्तिशाली किरणों में स्वयं को सुख स्वरूप अनुभव कर रही हूँ...* मुझ आत्मा से सुख की किरणें चारों ओर फैल रही है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा बगीचे में अन्य आत्माओं के साथ स्वयं को वार्तालाप करते हुए देख रही हूँ... *ट्रैफिक की आवाज सुन मैं आत्मा एक दम एलर्ट मन में चल रही संकल्पों की धारा को एकाग्रता की शक्ति से मोड कर परमधाम में शिव पिता से जोड़ देती हूँ...* प्रेम के सागर से प्रेम की बरसात मुझ आत्मा पर हो रही है... और मुझ से ये किरणें अन्य आत्माओं पर पड़ रही हैं... *वे सभी भी ईशवरीय प्रेम का अनुभव कर रही है...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा गाड़ी में बैठी हूँ... *मैं आत्मा मन में चल रहे संकल्पों के ट्रैफिक को एक सेकंड में आत्मिक स्थिति रूपी लाल बत्ती जलाकर स्टाप करती हूँ...* अनुभव कर रही हूँ, मैं निराकार आत्मा स्वयं को पवित्रता के सागर के झरने के नीचे... *पवित्रता की अनंत किरणें मुझ आत्मा में समा रही हैं... और मुझ से निकल चारों ओर फैल रही है...* सभी आत्माएं और प्रकृति भी इन किरणों को पाकर सुख-शांति का पवित्रता का अनुभव कर रही है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा देख रही हूँ स्वयं को खेतों में कार्य करते हुए... मैं आत्मा खेतों में बीज बो रही हूँ... तभी *मैं आत्मा मन में उठ रही संकल्पों रूपी शाखाओं के विस्तार को एक सेकेंड में समेट परमधाम में अपनी मास्टर बीजरुप स्थिति का अनुभव कर रही हूँ...* बीजरुप बाबा की शक्तिशाली किरणों के नीचे *मैं आत्मा स्वयं को बेहद शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ... विदेही हूँ ये स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ... देह से न्यारे होने से... सब से न्यारी हो गयी हूँ... अब एकाग्रता की शक्ति भी बढ़ गयीं है... कंट्रोलिंग पॉवर भी बढ़ गयी है... देह के कमजोर संस्कार स्वभाव धीरे-धीरे नष्ट होते जा रहे है...* और बार-बार के विदेही होने के अभ्यास से, मैं आत्मा माया के किसी भी प्रकार के प्रभाव से मुक्त हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔